अध्ययन सामग्री

एम. ए. सेमेस्टर 2

CC IX UNIT 3

डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग
एच. डी. जैन कॉलेज
वी. कुं. सिं. वि०, आरा

उत्तररामचरितम्

08.08.20

'उत्तररामचरितम्' में चित्रदर्शनांक का महत्त्व

भवभूति के 'उत्तररामचरितम्' रूपक का कथानक वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा पर आधारित है। इस नाटक का प्रयोजन सीता के पुनर्निवासन के द्वारा समाज के मनोभावों की शुद्धि के बाद उनका ऋषियों के आज्ञा से पुनर्ग्रहण है। भवभूति ने अपने कथानक को नाटकीय बनाने और अपने प्रयोजन की सिद्धि हेतु मूल कथा को पर्याप्त परिवर्तनों के साथ प्रस्तुत किया है। सीता का निर्वासन इस नाटक का बीज है जो विस्तीर्ण होकर, बढ़कर रूपक का पूर्णाकार धारण कर लेता है। इस घटना को स्वाभाविक एवं नाटकीय ढंग से प्रदर्शित करने के लिए महाकवि ने 'चित्रदर्शन' नामक युक्ति से काम लिया है। यह कवि की कल्पना का चमत्कार है। यह युक्ति अत्यन्त मनोवैज्ञानिक कारणों से संयुक्त है। सीता के निर्वासन में गुरुजन तथा गर्भावस्था से शिथिल सीता का विरोध बाधक न हो, इसके लिए एक ओर तो उसने श्रीराम के गुरुजनों को ऋष्यशृंग के वासन्तीय यज्ञ में भाग लेने भेज दिया और दूसरी ओर चित्रवीथिका यज्ञ में भाग लेने भेज दिया और दूसरी ओर चित्रवीथिका में प्रवेश कराके सीता के द्वारा ही दण्डकारण्य देखने की दौहदेच्छा (गर्भवती की इच्छा)

अभिव्यक्त कराई। इस घटना की स्वाभाविकता प्रदान करने के लिए चित्रदर्शन की योजना कवि ने प्रथम अङ्क में प्रस्तुत की है और प्रथम अङ्क का नामकरण चित्रदर्शनाङ्क किया है।

डॉ० गङ्गासागर राय के शब्दों में 'चित्रदर्शन' नाटकीय वस्तु-योजना की दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे अग्रलिखित तथ्यों का संकेत मिलता है —

1) लक्ष्मण द्वारा सीता की अग्नि शुद्धि तक चित्र बनने की सूचना दी जाती है। इससे सीता के त्याग में सहायता मिलती है। साथ ही सीता-विषयक लोकापवाद का स्मरण हो जाता है।

2) चित्रदर्शन से सीता के हृदय में पञ्चवटी को पुनः देखने की इच्छा जाग्रत हो उठती है। अतः राम को आसानी से सीतात्याग का अवसर मिल जाता है। इस प्रकार यह दृश्य सीता-परित्याग के कारण और अवसर दोनों को उपस्थित कर देता है।

3) सीता के पुत्र लव और कुश में राम द्वारा जृम्भकास्त्र के प्रादुर्भाव का संकेत इसी दृश्य में मिलता है। इससे नाटक के अन्त में लव-कुश को पहचानने में सहायता मिलती है।

4) इसी दृश्य में सीता-परित्याग के समय राम पृथ्वी और गंगा से सीता-रक्षा की प्रार्थना करते हैं। इसी प्रार्थना के फलस्वरूप देवियों द्वारा सीता की रक्षा और मिलन-प्रसंग में इसका संकेत दिया जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भवभूति ने चित्रदर्शनाङ्क में चित्रदर्शन की योजना का विनियोग केवल सीता के मनबहलाव के हेतु न करके नाटक के घटनाचक्र पर व्यापक प्रभाव डालने के लिए बीज के रूप में किया है। चित्रदर्शन के मनोवैज्ञानिक या सूक्ष्म दृष्टि से चार प्रयोजन निरूपित किया गया है —

1) चित्रदर्शन से राम और सीता को भूतकालीन जीवन की घटना याद आ जाती है। पञ्चवटी राम के जीवन में उनके दाम्पत्य सुखभोग की स्थली होने के कारण सुखमय जीवन की साक्षिनी बन गई थी।

2) चित्रदर्शन में राम का पञ्चवटी के प्रति अनुराग व्यक्त है और तृतीय

अंक में वे सीता के वियोग में उन्हीं स्थानों पर जाकर रोते हैं। यह अत्यन्त मनोवैज्ञानिक है।

3) चित्रदर्शन प्रसंग में राम और सीता का प्रगाढ़ प्रेम का परिचय मिलता है। इस दृश्य में सीता के प्रति राम का अटूट प्रेम-प्रदर्शन पुनर्मिलन की भूमिका है। ये चित्र वियोगी राम के मनोविनोद और आश्वासन के साधन माने जा सकते हैं।

4) नाटक के आरम्भ की महत्त्वपूर्ण घटना, सीता का राम से वियोग को भी इसी दृश्य के अन्तिम भाग में उपस्थित कर देता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रथम अंक में सीता के परित्याग की पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए चित्रदर्शन की योजना करके महाकवि ने अपने अद्भुत नाटकीय कौशल का परिचय दिया है। इस कौशल के द्वारा सीता परित्याग की अत्यन्त विवादास्पद एवं विरोधपूर्ण घटना अनायास एवं स्वाभाविक ढंग से घटित हो जाती है और सामाजिकों को सीता के पुनर्ग्रहण का आश्वासन मिल जाता है। चित्रदर्शन में हमें महाकवि भवभूति के भावात्मक पक्ष का परिचय मिलता है। इसी में हमें राम के अन्तर्द्वन्द्व का परिचय मिलता है। एक ओर तो राजधर्म की मर्यादा है और दूसरी ओर प्रगाढ़ दाम्पत्य प्रेम का पवित्र भाव। दोनों में पर्याप्त संघर्ष है। यह अन्तर्द्वन्द्व कथानक को गम्भीरता प्रदान करता है। अतः नाटकीय कथावस्तु - संविधान, चरित्र-चित्रण एवं भावात्मक पक्ष - तीनों ही दृष्टि से इस अंक का महत्त्व है।